RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

पर्यावरण एवं परिस्थितिकी तंत्र पर आधुनिकता का प्रभाव

डा0 ममता देवी

सहा0 प्राध्यापक (राजनीतिक शास्त्र) माँ ओमवती महा विद्यालय, हसनपुर (पलवल)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
पर्यावरण औद्योगिक क्रांति विकास

ABSTRACT

आज का मानव भौतिकता एवं आधुनिकता पर इतना आधरित होता जा रहा कि वह मानव जाति के अस्तित्व को ही खतरे में डाल रहा है। अर्थात् पर्यावरण और पारिस्थितिकी संकट मौजूदा दौर के ऐसे विषय है जिन पर दुनियाभर में सवाधिक बहस हो रही है क्याकि भौतिकता एवं आधुनिकता का पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र पर जो प्रभाव पडा है। उसे देखकर लगता है कि पर्यावरण एवं पारिस्थतिकी तंत्र को मानव से ही खतर हो रहा है।

औद्योगिक क्रांति और आधुनिकता विकास की आंधी ने इन धारणाओं को ध्वस्त कर दिया हैं आज मानव की लालसा को ऊॅचे ऊॅचे पखं लग गए है। उपभोगक्तावादी जीवन मूल्य मनुष्य के जीवन पर हावी हो गए है। जिसके फलस्वरूप मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनो का बेलगाम दोहन शुरू कर दिया है और आज स्थिति यह है कि समस्त विश्व पर्यावरण प्रदूषण और पारिस्थितिकी असंतुलन की भयावह समस्या से आक्रांत है। (नदियां सुख रही है, जीव जन्तुओं की प्रजातियॉ तेजी से खत्म हो रही है, हरे भरे भू– भाग को काट कर वीरान किया जा रहा है, समय से पहले मानव जाति अनेक बीमारियों से ग्रस्त हो कर मौत के गर्त में जा रहें है। आज यह सब देखकर ऐसा लगता है कि विकास की अंधी दौड के बीच मानव पर्यावरण बचाने को लेकर बहस कर रहा है हमें यह समझने की जरूरत है कि अपना पर्यावरण और पारिस्थितिकी बचाने की जिम्मेदारी से हम बचते रहे तो अपने हाथों से ही अपने विनास की कहानी लिखेगे।

आधुनिकता का पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव

सर्व प्रथम ए. जीव. टैनसले ने सन् 1935 में परिस्थितिकी तन्त्र का प्रयोग किया था। इसने परिस्थितिकी तंत्र की परिभाषा भौतिक प्रणाली के रूप में की थी। जिसमें जैविक और अजैविक घटक शामिल होते हैं और इनमें स्थिर सन्तुलन होता है।

परिस्थितिक का स्वरूप

परिस्थितिकी के विकास में भोजन के स्वरूप, समस्याओ विषमताओं और जीव–धारियों में पारस्पारिक सम्बधों का अध्ययन किया जाता है। आधुनिकी परिस्थितिकी को जैविक ऊर्जा आयाम कहते है। परिस्थितिकी को परिस्थिति–तंन्त्र का अध्ययन कहा जाता है।

इवान्स के अनुसार ''परिस्थितिकी की तन्त्र संचालन परिवर्तन और ऊर्जा का संचय जो पदार्थो के माध्यम से जीवधारियों की क्रियाओं से होता है। गतिशील अजैविक पर्यावरण के तत्वों का पौधों और जानवरों में संचय अन्तः क्रिया के माध्यम से होता है। जिससे सुधार एंव परिवर्तन होता रहता है। जिससे परिस्थितिकी प्रणाली का विकास होता है।''

परिस्थिति प्रणाली के प्रकार

प्राकृतिक परिस्थिति प्रणाली (तंन्त्र) | **कृत्रिम/मानवीकृत परिस्थिति प्रणाली** | **अन्तरिक्ष परिस्थिति तन्त्र**

आधुनिक युग पर्यावरणीय संकट जिस तीव्र गति से गहराता जा रहा है। वह सम्पूर्ण मानव जाति के लिए खतरा बनता जा रहा है। पर्यावरण और परिस्थितिकी संकट वर्तमान समय का सबसे गम्भीर संकट है। जो मानव जाति के अस्तित्व को नष्ट कर सकता है। क्योंकि मानव का प्राकृतिक परिवेश यानी पर्यावरण खतरे में है और यह खतरा कोई छोटा–माटो खतरा नहीं बल्कि मानवीय सभ्यता पर एक ऐसा खतरा जो पूरी की पूरी मनुष्य प्रजाति को धीरे–धीरे नष्ट कर देगा।

भौतिकता और आधुनीकरण में मानव ने प्राकृतिक परिवेश का ऐसा यांत्रिकीकरण किया है कि मनुष्य खुद ही प्रकृति के सामने एक चुनौती के रूप में खड़ा हो गया है क्योंकि यह चुनौती मनुष्य प्रजाति के खुद के सामने है क्योंकि पर्यावरण और उस में मौजूदा पारिस्थितिक तन्त्र का संकट का नकारात्मक असर अनतः मनुष्य पर ही पडता है अर्थात किसी जीव को लेकर किसी नदी तक के विलुपत होने का पहला असर मानव पर ही पडेगा आज पूरे संसार में पयावर्णन बचाने की मुहिम चल रही है ऐसा इसलिए है कि कुछ हद तक यह समझ लिया गया है कि मानवीय हस्तक्षेप से पर्यावरण को खतरे मे डालना पर्यावरण संकट ऐसा भस्मासुर बन गया है कि जिस में सम्पूर्ण मानव जाति खुद को ही भस्म कर लेगी।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

परिस्थित्य तन्त्र एक जटील प्राकृतिक संरचना है जो सजीव प्राणियों तथा उनके चारो तरफ के परिवेश से निरमित होती है। पारस्थितिकि तन्त्र में सभी जन्तु एवं प्राणी समुदाय आपस के वातावरण से उर्जा द्रव आदि का आदान प्रदान करते रहते हैं कुछ जीव वातावरण से विभिन्नि पदार्थो को ग्रहण कर अपने शरीर में वृद्वि करते है और कार्बनिक पदार्थो को बनाते है। ये कार्बनिक पद्वार्थ विखन्डित होकर अकार्बनिक पदार्थो मे बदल जाते है पृथ्वी पर उर्जा का प्रमुख स्रोत्र सूर्य है जिसके द्वारा सभी जीव प्रदार्थ उष्मा को ग्रहण करते है। तथा हरे पौधे इस उर्जा को प्रकाश–संष्लेषण क्रिया द्वारा रासायनिक उर्जा में परिवर्तित करते है अन्य जीव धारी इन्ही पौधे को भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र में विभिन्न प्रकार के पदार्थे का एक चक्र चलता रहता है। इसमें नाइट्रोजन चक्र जल चक्र कार्बन चक्र फास्फोरस चक्र आदि मुख्य हैं। वे जीवधारी जो अपना भोजन खुद ही बनाते है। स्वयंपोषी कहलाते है, जो जीवधारी दूसरे जीवधरियो पर निर्भर रहते हैं परपोषी कहलाते है। सभी जीवधारी भोजन के आधार पर एक तरह का संतुलन बनाते है। इस प्रकार सभी भौतिक तथा जैविक कारणों में आपस में संबंध होता है। सभी जीव–जंतु एक दूसरे समुदाय को और साथ ही अपने आसपास के वातावरण को भी प्राभावित करते है इनमें आपस में एक छोटे प्राणी से लेकर जंतु समाज एवं मानव समाज के बीच एक पारिस्थितिकी तंत्र अथवा इंको सिस्टम निर्मित होता है। जब यह श्रृखला टूटती है। तो यह तंन्त्र प्रभावित होता है औधोगीकरण, मशीनी करण, जंगलो को कटाई, नदियों और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से इन सभी जीव समुदाय में से जब कोई समुदाय प्रभावित होता है तो यह श्रृंखला टूटती हैं। और पारिस्थितिकी संतुलन बिगडता है। और पारिस्थितिकी तंत्र के जितने भी घटक है उनमे मनुष्य जाती को ही सबसे षक्तिषाली प्रजाती माना जाता है। लेकिन आधुनिक युग में वह अपनी सुख सुविधा के लिए प्रकृति को नष्ट करता जा रहा है। वह प्राकृतिक संसाधनो का न सिर्फ दोहन करता है बल्कि उन्हे कृत्रिम तरिके से नियंत्रित भी करता है। और अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए अनुचित तरिके से लाभ कमाना चाहता है। परिस्थितिकी तंत्र मे अकेला मनुष्य ही ऐसा जीव है। जो पूरी पारिस्थितिकी को छिन्न भिन्न करता हैं। पारिस्थितिकी पर जो खतरा है, वह मानव ने उत्पन्न किया हैं। जिसके कारण आज सम्पूर्ण मानव जाति के अस्तित्व पर प्रष्न चिन्ह लग गया है।क्योकि आज पृथ्वी पर जो खतरा है, मानव ने उत्पन्न किया है। मानव की विकास प्रक्रियाऐं पर्यावरण और पारिस्थितीकी के सभी चक्रो को प्रभावित कर रही है। आज मनुष्य भैतिकता कि बढती हुई प्रवति के कारण, तेजी से बढती जनसंख्या व औद्यौगीकरण के दौर में ज्यदा से ज्यादा सुविधा और तकनीकी विकास हासिल करने के लिए मनुष्य प्रकृति का भरपूर दोहन कर रहा है। जिसके फलस्वरूप हम निष्चित तौर पर यह नही कह सकते है कि हमारा स्थायी विकास हो रहा है। क्योंकि पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन बहुत तेजी से हो रहा है जिसके कारण मनुष्य जाति अनेक प्रकार के रोगो से ग्रस्त होती जा रही है अर्थात् मनुष्य के बेतहाषा विकास के लोभ ने प्रकृति निर्मित पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूलन प्रभाव डाला है, यह प्रतिकूलन सम्पूर्ण ब्रहामण्ड का पर्यावरण संतुलप बिगड रहा है जिसकी जानकारी अनेक रिर्पाट के माध्यम से हमारे सामने आई रेड बुक ऑफ वाइल्ड के अनुसार 1600 ई से 1990 ई के बीच 36 स्तनधारी और 94 पक्षियो की प्रजातियों लुप्त हो गई है। जबकि सतनधारियो की 236 प्रजातियॉ तथा पक्षियो की 287 प्रजातियों लुप्त होने की कगार पर है। पारिस्थितिकी का आधार भूत सिंद्वान्त यह कि यदि प्राणियो के 90 प्रतिषत आवास नष्ट हो जाए तो उन्हे बसाने वाली 50 प्रतिषत जैव प्रजातियों स्वतः विलुप्त हो जाऐगी। इस सिद्वान्त और उष्ण कटिबंधीय वनो के विनाष की दर के आधार यह अनुमान लगाया है कि उष्ण कटिबंधीय वनो में निवास करने वाली 5–15 प्रतिषत जीवो को प्रतियाँ आने वाले वर्षो में हमेषा के लिए गायब हो जाएगी । स्थलीय विविधता, सक्रिय जलवायु ,लंबे सागर ,तट तथा उनके समुद्री दीपों के चलते प्रकिृति ने जैव और पादप विविधिता के मामले में भारतीय उपमहादीपों को विषेष रूप से संवारा है।

दुनियाभर में कितनी ऐसी प्रजातियाँ जो या तो विलुप्त हो चुकी है। या होने कि कगार पर है, दक्षिण अमरीका में बंदरों को कुछ प्रजातियो को विलुप्त प्राय घोषित कर दिया गया है। मैम्सिकों के ब्लेक हाऊलर बंदर को विलुप्त प्राय घोषित किया जा चुका है। ऐसी विलुप्त प्राय प्रजातियो की संख्या भारत, चीन ,इंडोनेषिया , ब्राजील, और पेरू में सर्वाधिक है। इक्वाडोर, मलेष्यिा, ब्राजील और श्रीलंका मे वनस्पतियों को कई प्रजातियाँ, तेजी से विलुप्त हो रही है। दुनिया भर में ,शार्क, मछलियाँ, ध्रुवीय भालू ,दरियाई घोडे जैसे महत्वपूर्ण जीव विलुप्तप्राय प्रजातियों की सूची मे हैं। भारत में भी गौरयि चिडियां की प्रजाति भी नष्ट होने के कगार पर है। इनका कारण मानवजाति को माना जाता है। मनुष्य आधुनिकता के कारण तेजी से हो रहे विकास के मद्वेनजर मनुष्य पर्यावरण का अतिक्रमण कर रहा है। जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष का असर पर्यावरण पर पड रहा है।

2011 के भारतीय वन सर्वेक्षण के मुताबिक देष के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 23.81 प्रतिषत हिस्सा वन क्षेत्र हैं जबकि पचास वर्ष पहले तक देष का 40 प्रतिषत भू–भाग वनो से आच्छादित था इतनी तेजी से वनों का सफाया ही वैष्विक तपन का कारण बन रहा है और दुनिया के बडे – बडे ग्लेषियर पिघल रहे है। जिसका प्रभाव हमे आज स्पष्ट रूप विष्व में देख सकते है। जों अप्राकृति घटाने के रूप में उभरकर हमारे सामने आते है जिसके द्वारा जान–मान की हानि होती है। यह संकट भारत में और भी संघन है हाल ही में विषेषज्ञो की रिर्पोट में कहा गया कि जिस तरह जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान बढ रहा है अगर इसी तरह बढता रहा तो पूर्वी हिमालय के अधिकांष हिस्सो से बर्फ खत्म हो जाएगी और इससे अरूणाचल प्रदेष की पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर खतरा पैदा हो जाएगा। तापमान मे 0.5 डिग्री सेल्यिस की बढत होने पर पहाडी इलाको का लगभग 912 वर्ग किमी क्षेत्र की बर्फ पिघल जाएगी। उधर स्टेंट एक्शन प्लान ऑन क्लामेंट चैंस के मुताविक 2030 के दषक में अधिकतम तापमान 2.2 से 2.8 डिग्री सेल्सियस की बढत की संभावना हैं। तो इसका स्पष्ट मतलब है, कि आने वाले समय मे मनुष्य प्रजाति का अस्तित्व संकट मे है।

भारतीय भू–भाग में भी पारिस्थितिकी खतरे मे है। जलवायु परिवर्तन के अलावा प्राकृतिक परिवेष मानवीय दखल

और मानव की स्वाभावगत लालच इसकी मुख्य वजह हैं। यहाँ वन्य जीवों की तस्करी, षिकार, आदि प्रमुख कारण है। जो हमारी पारिस्थितिकी को प्रभावित कर रहे है। सबसे बडी बात तो यह है कि हम इन खतरो को तो पहचान चुके हैं लेकिन हमारे पास किसी भी स्तर पर इसका निदान नही है।पिछले साल जनवरी से अब तक अकेले काजीरंगा नेषनल पार्क में ही 45 गैडों का षिकर हो चुका है। मध्य प्रदेष में करीब 60 हिरणो को हाल ही में मौत हो गयी है उत्तरा खण्ड और उत्तर प्रदेष के जंगलो में बाधों और अन्य जीवो का तस्करो द्वारा षिकार भी सरकारे नही रोक पा रही है। प्रकृति में मानवी दख्ल से वन्य जीवन को जो नुकसान हो रहा है। उसके न रूकने के दो कारण है। एक तो आधुनिक विकास की धारा ऐसी है की है कि उसे रोका नही जा सकता चाहे प्रक्ति को कैसा भी नुकसान हो। इस आधुनिक युग में विकास की सबसे आगे निकलने की दौड में कोई भी देष पीछे नही रहना चहता इसलिए विष्व का हर देष अपने भू–भाग पर मौजूदा प्राकृतिक संसाधनों का ही दोहन करता है। फलस्वरूप पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होता हैं। इससे अब तक हमारी सरकारो के पास जंगलों के संरक्षण को लेकर ऐसी प्रभाव वाली नीतियाँ नही हैं कि वन्य जीवो का षिकार, अंधाधुंध दोहन आदि नियंत्रित हों।

वर्तमान समय में भारत की दषा और भी खराब है। March 2019 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम में GEO-6 नाम से जारी एक रिपोर्ट में कहा गया है। कि वायु प्रदूषण से 2018 मे भारत में 1.24 मिलियन लोगों की मृत्य हुई जो कि सभी मौतों का लगभग 12.5 प्रतिषत है।

अतः इसलिए हम कह सकते हैं। कि पर्यावरण संकट आज एक ऐसे संकट के रूप में हमारे सामने आ खडा हुआ है। कि यदि उसका कोई ठोस समाधान नही किया गया तो उसकी अंतिम परिणति सामूहिक विनाष में होनी। एक ऐसा विनाष जिसमे केवल मनुष्य का ही वजूद नही मिटेगा अन्य प्राणी भी नेस्तनाबूत हो जाएगें और यह धरती भी साबूत नही बचेगी। किसी को यह परिणति एक अतिष्योक्ति लग सकती है। लेकिन निकट अतीत में समय–समय पर आने वाले सुनामियों और भूकंपों से होने वाले विनाष इसी भयावह भविष्य की बानगी है।

यद्यपि ऐसा नही कहा जा सकता कि आदमी इस विनाष लीला से बचने के लिए कुछ नही कर रहा समय–समय पर होने वाले पर्यावरण – विषयक सम्मेलन पत्र पत्रिकाओं में छपने वाले लेख विभिन्न मुल्को द्वारा बनाऐ गऐ कानून दंड के प्रांबधान तथा जन आंदोलन आदि इस बात के पुख्ता प्रमान हैं कि मनुष्य इस ओर से उदासीन नही है लेकिन इतना कुछ करते रहने के बावजूद यदि अपेक्षित परिणाम नही आए है तो सिर्फ इसलिए कि इसके लिए जो व्यावहारिक प्रयास किया जाना चाहिए वह नही हो पा रहा है। अर्थात केवल वैचारिक अवगाहन और शाब्दिक जुमलेबाजी से कुछ नही होता इसके लिए कठोर कदम उठाने होंगे।

आज आवश्यकता इस बात की है। कि मनुष्य ने अब सोच विचार करना शुरू कर दे कि उसके आर्थिक प्रलोभन से सम्बन्धित गतिविधयाँ ही धरती पर उसके अस्तित्व के लिए खतरा बन गई है। इस पृथ्वी पर अपने अस्तित्व को बनाये रखने हेतु मनुष्य के लिए यह आवष्यक है कि पर्यावरण के घटक कौन से हैं और पर्यावरण मे कैसी प्रक्रियाएं होती रहती है इनके अतिरिक्त उसे इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए पर्यावरण के विभिन्न जीव एवं अजीव का एक दूसरे से क्या सम्बन्ध है। इसके साथ यह भी समझाना होगा कि किसी प्रदेश के साधनो का आंकलन उस प्रदेष के निवासियों की आवश्यकताओं को ध्यान मे रखकर ही करना पडेगा। अर्थत् वातावरण की समस्याओं को जानकर उनके समाधन हेतु उपयुक्त सार्थक एवं सशक्त उपाय करने चाहिए ताकि भविष्य के नागरिकों के लिए इस पृथ्वी को रहने योग्य बनाये रख सके।

संदर्भ ग्रंथ

1. डा0 के0 सी0 जैन/शैल जैन पर्यावरण शिक्षा 546, Book Market, Ludhiana, Ludhiana – 141008 पेज 223, 228
2. राव बी. पी. श्री वास्तव वही के 2006 पर्यावरण और परिस्थितिकी
3. सिंह सविन्द (2004) पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन इलाबाद पेज –4–10
4. शर्मा–विष्णुदत्त – पर्यावरण प्रदूषण– आर्य प्रकाशन पेज 8–10
5. जोषी रतन, पर्यायवरण अध्ययन, साहित्य भवन पब्लिकेषन आगरा 2005 पेज 20–21
6. लाल. डी. एस. जलवायु विज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद 2008 पेज 2,3,20,21

RRIJM 2015, All Rights Reserved